आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 30-12-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा राज (razz) समझाकर मास्टर टीचर बनाने वाले, ज्ञान-सागर बेहद के टीचर-बाप ने कहा, हर एक को मुरली चलाने की प्रैक्टिस जरूर करनी चाहिए क्योंकि तुम मुरलीधर के बच्चे हो. अगर मुरली नहीं चलाते हो तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे. किसी को सुनाते रहो तो तुम्हारा मुख जरूर खुल जायेगा. तुम हर एक को बाप समान टीचर जरूर बनना है. जो तुम पढ़ते हो वही तुम्हें औरों को भी पढ़ाना है. यह पावन बनने की पढ़ाई सब पढ़ाईयों से सहज है, इसे बच्चे, जवान, बूढ़े सब पढ़ सकते है. सबको बाप से वर्सा लेने का अधिकार हैं.

मुरलीधर-शिवबाबा की सब मुरलीओं से हमें तीन बातों का ज्ञान मिलता है - आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज(razz). ज्ञान-सागर बाप की मुरलीओं से हमें परमात्मा (भगवान) की सही पहचान मिलती हैं. भक्ति-मार्ग में रही कई गुत्थी ओ का सही हल भी मिलता है, सही समझ मिलती है. आधा-कल्प से हम ने भक्ति-मार्ग में कई शास्त्रों, ग्रंथों, उपनिषदों को पढ़ा है लेकिन फिर भी न हम सच्चे राम (शिव ही सच्चा राम हैं) को पहचान सके न माया-रावण को जान सके. बाबा हमें भक्ति-मार्ग में रही सभी बातों को क्लियर कर समझाते हैं. इसी समझ से हमारा ज्ञान रुपी तीसरा नेत्र खुल जाता हैं. हमें सच और झूठ की सही समझ मिलती हैं. बाबा चाहते है की हम सब ब्राह्मण आत्मा ये हमारे भारत के गाँव-गाँव में जाकर जन-जन को यह ज्ञान देवे और उनके भाग्य का सितारा भी चमकाये, क्योंकि जीतना हमारा भारत महान है उतने ही हम भारतवासी भी सबसे श्रेष्ठ, ऊंच दैवी-कुल के हैं. पवित्र आत्मा ये हैं. सब भारतीयों को शिवबाबा से वर्सा लेने का अधिकार हैं.

आज की मुरली से परमात्मा की सही पहचान पर कहे गये महा-वाक्यों -----

- बाबा ने कहा, बच्चों को इस शिवरात्रि (शिवबाबा की जयंती) पर शिवबाबा का सही परिचय सबको देना हैं. सभी शिवबाबा की जयंती मनाते है. नाम भी शिव का लेते है, वह तो है ही निराकार. जानते भी है कि शिव ही जन्म-मरण रहित है, इसलिए भक्ति-मार्ग में शिव के माता या पिता नहीं बताते है (सभी देहधारी दैवी-देवताओं को माता-पिता बताते है).

- बाबा ने कहा, तो पुछो शिवबाबा कैसे आयेंगे? उन्हें भी प्रकृति (पाँच तत्वों के बने शरीर को ही प्रकृति कहा जाता है) का सहारा लेना होता हैं. भक्ति-मार्ग में फिर गऊ-मुख दिखाते है,

उसकी भी महिमा है. तो बाप समझाते है वह निराकार शिव ही इस ब्रह्मा-मुख (भक्ति-मार्ग का गऊ-मुख) द्वारा अभी हमें सृष्टि चक्र का सारा ज्ञान दे रहे है.

- बाबा ने कहा, भक्ति-मार्ग में शिव की सबसे जास्ती महिमा भारत में गाते है, तो वह जरूर कुछ करके गया हैं. तुम पूछ सकते हो - क्या करके गये है? उन्हें बताओ कि भारत को नरक से निकालकर भारत को ही स्वर्ग बनाकर गया हैं. बरोबर भारतीयों को ही शिवबाबा से बेहद का वर्सा मिलता हैं.

- बाबा ने कहा, शास्त्रों में भी लिखा है भारत ही सच-खण्ड था क्योंकि भारत में ही शिव का अवतरण होता हैं. भक्ति में कहते भी है शिव ही सत्य है, सत्य ही शिव है. भगवान को ही टुथ कहा जाता हैं. तो जो सत्य बाप है वह जिस पवित्र भूमि पर आते है वह भूमि भी सच-खण्ड कहलाती है.

- बाबा ने कहा, भक्ति मार्ग में नर से नारायण बनने की कथा भी नामीग्रामी है. पूरण मासी पर बहुत जगह सत्य-नारायण की कथा भी होती है. अभी यह कथाएं तो आधा-कल्प से करते आये लेकिन एक भी आत्मा नारायण बन नहीं सकी. अभी सचमुच स्वयं शिव-बाबा आकर सच्ची नर से नारायण बनने की पढ़ाई पढ़ाते है. यह पावन बनने की पढ़ाई से ही आत्मा परिवर्तन होती हैं. यह पढ़ाई है भी बहुत सहज. गीता में भी लिखा है - मनमनाभव. जिसका सही अर्थ भी शिव-बाप समझाते है - हे मनुष्य, स्वयं को आत्मा समझ मुझ परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म हो जायेंगे और तुम पतित से पावन बन जायेंगे.

- बाबा कहते है भक्ति में तुम खुद को आत्मा तो समझते हो. अभी बाप ने आकर तुम्हें आत्मा पर भी समझाया है. आत्मा तो एक छोटी-सी बिंदी है जो भृकुटी में रहकर इस शरीर द्वारा पार्ट बजाती हैं. जैसे आत्मा छोटी सी बिंदी है वैसे परमात्मा भी बिंदी है. आत्मा अति सूक्ष्म होने के कारण इन नेत्रों से देखा नहीं जा सकता. जैसे तुम्हारी आत्मा इस सृष्टि चक्र में आकर ८४ जन्मो का पार्ट बजाती है वैसे ज्ञान-सागर परमात्मा भी इस समय, संगमयुग पर आकर अपना ज्ञान देने का अलौकिक पार्ट बजाते है. भक्ति-मार्ग में आत्मा ये उन्हें पुकारती भी है - बाबा, आकर हम को इस पतित दुनिया से नई पावन दुनिया में ले चलो. वही शिव-भगवान अभी आकर मनुष्यों को दैवी-देवता बनने का रास्ता बतलाते है और फिर उन्हें पतित से पावन दुनिया में भेज देते है. ॐ शांति.